



Ancient Vedic Mantras and Rituals





Shrimad Bhagavad Gita Chapter-4 Shalok-7 | श्रीमद् भगवद्गीता अध्याय चार-श्लोक सात | PDF

अध्याय 4 – ज्ञान कर्म संन्यास योग

श्लोक 7

श्रीभगवानुवाच ।

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत ।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥7॥

सरल हिंदी में भावार्थ

भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं—

हे भारतवंशी अर्जुन! जब-जब संसार में धर्म की हानि और पतन होता है तथा अधर्म की वृद्धि होने लगती है, तब-तब मैं स्वयं को प्रकट करता हूँ।

विस्तृत व्याख्या

धर्म की हानि और अधर्म की वृद्धि

इस श्लोक में भगवान श्रीकृष्ण संसार में अपने दिव्य प्रकट होने का एक महत्वपूर्ण कारण बताते हैं।



जब समाज और संसार में धर्म, सत्य, न्याय और सदाचार का पतन होने लगता है तथा अधर्म, अन्याय और अनैतिकता बढ़ने लगती है, तब संतुलन बिगड़ने लगता है।

ऐसी स्थिति में भगवान अपने दिव्य स्वरूप के माध्यम से धर्म की पुनः स्थापना के लिए प्रकट होते हैं।

भगवान का संसार में प्रकट होना

भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं कि जब-जब धर्म की हानि होती है, तब-तब वे स्वयं को प्रकट करते हैं।

भगवान का यह प्रकट होना सामान्य जीव के जन्म के समान नहीं है। पिछले श्लोक में भगवान ने बताया कि वे अपनी दिव्य शक्ति के द्वारा संसार में प्रकट होते हैं।

इसलिए भगवान का अवतार किसी कर्मबंधन के कारण नहीं, बल्कि एक दिव्य उद्देश्य के लिए होता है।

धर्म का वास्तविक अर्थ

यहाँ धर्म का अर्थ केवल किसी विशेष धार्मिक परंपरा या बाहरी धार्मिक कर्मकांड से नहीं है।

धर्म का व्यापक अर्थ सत्य, न्याय, कर्तव्य, सदाचार, करुणा और उस जीवन-पद्धति से है जो व्यक्ति तथा समाज को सही दिशा में ले जाती है।

जब मनुष्य अपने कर्तव्य और नैतिक मूल्यों से दूर होने लगता है,



तब धर्म की हानि होने लगती है।

अधर्म की वृद्धि

अधर्म का अर्थ धर्म के विपरीत आचरण है।

जब समाज में अन्याय, हिंसा, छल, स्वार्थ, अत्याचार और नैतिक मूल्यों का पतन बढ़ने लगता है, तब अधर्म की वृद्धि होती है।

भगवान बताते हैं कि ऐसी परिस्थितियों में वे धर्म की रक्षा और संतुलन की पुनर्स्थापना के लिए दिव्य रूप से प्रकट होते हैं।

भगवान का दिव्य उद्देश्य

भगवान का अवतार केवल किसी एक व्यक्ति या समुदाय के लिए नहीं होता। उनका उद्देश्य व्यापक रूप से धर्म, सत्य और सदाचार की स्थापना करना होता है।

भगवान अपने दिव्य कर्मों के माध्यम से संसार को यह संदेश देते हैं कि अंततः धर्म और सत्य की विजय होती है।

यह विश्वास साधक के भीतर कठिन परिस्थितियों में भी धर्म के मार्ग पर चलने की प्रेरणा उत्पन्न करता है।

धर्म और अधर्म का संतुलन

संसार में धर्म और अधर्म के बीच संघर्ष निरंतर चलता रहता है। जब अधर्म अत्यधिक बढ़ जाता है और धर्म कमजोर पड़ने लगता है, तब भगवान की दिव्य शक्ति धर्म की पुनः स्थापना में सहायक होती है।



यह श्लोक हमें यह विश्वास देता है कि अन्याय और अधर्म कितना भी बढ़ जाए, धर्म और सत्य की शक्ति अंततः पुनः स्थापित हो सकती है।

पिछले श्लोक से संबंध

श्लोक 6 में भगवान श्रीकृष्ण ने बताया कि वे अजन्मा और अविनाशी होते हुए भी अपनी दिव्य शक्ति से संसार में प्रकट होते हैं।

अब श्लोक 7 में वे बताते हैं कि वे संसार में कब और क्यों प्रकट होते हैं।

जब धर्म का पतन और अधर्म की वृद्धि होती है, तब भगवान स्वयं को प्रकट करते हैं। अगले श्लोक में भगवान अपने अवतार के उद्देश्य को और स्पष्ट करेंगे।

ज्ञान कर्म संन्यास योग का व्यवहार में प्रयोग

यह श्लोक साधक को अपने व्यक्तिगत जीवन में भी धर्म और सदाचार को बनाए रखने की प्रेरणा देता है।

ज्ञान कर्म संन्यास योग के मार्ग पर व्यक्ति को अपने कर्तव्य को सही ज्ञान, निःस्वार्थ भाव और भगवान के प्रति समर्पण के साथ करना चाहिए।

जब हम अपने जीवन में सत्य, न्याय, करुणा और कर्तव्य का पालन करते हैं, तब हम धर्म की स्थापना में अपना योगदान देते हैं।



इस प्रकार भगवान के अवतार के संदेश को केवल ऐतिहासिक घटना के रूप में नहीं, बल्कि अपने जीवन में धर्म और सत्य को अपनाने की प्रेरणा के रूप में भी समझा जा सकता है।

मुख्य बिंदु

- जब धर्म की हानि होती है, तब भगवान प्रकट होते हैं।
- अधर्म की वृद्धि भगवान के दिव्य प्रकट होने का एक प्रमुख कारण है।
- भगवान का प्रकट होना सामान्य जीव के जन्म के समान नहीं है।
- भगवान अपनी दिव्य शक्ति से संसार में प्रकट होते हैं।
- धर्म का अर्थ सत्य, न्याय, कर्तव्य और सदाचार से भी है।
- अधर्म का अर्थ धर्म और नैतिक मूल्यों के विपरीत आचरण है।
- भगवान का उद्देश्य धर्म और सत्य की पुनः स्थापना करना है।
- यह श्लोक कठिन परिस्थितियों में धर्म के मार्ग पर बने रहने की प्रेरणा देता है।
- भगवान का अवतार संसार के कल्याण और धर्म की रक्षा से जुड़ा है।
- साधक को अपने जीवन में सत्य, कर्तव्य और सदाचार को अपनाना चाहिए।



गूढ आध्यात्मिक अर्थ

यह श्लोक भगवान के अवतार के मूल उद्देश्य को समझाता है। जब संसार में धर्म कमजोर पड़ता है और अधर्म का प्रभाव बढ़ने लगता है, तब भगवान अपनी दिव्य शक्ति के माध्यम से प्रकट होते हैं।

इस श्लोक का गहरा संदेश यह है कि धर्म का पतन कितना भी बढ़ जाए, परमात्मा धर्म की पुनः स्थापना के लिए दिव्य रूप से हस्तक्षेप करते हैं। भगवान का प्रकट होना केवल बाहरी व्यवस्था को बदलने के लिए नहीं, बल्कि मनुष्य को सत्य, धर्म और कर्तव्य के मार्ग की ओर वापस ले जाने के लिए भी होता है।

यह श्लोक साधक को अपने जीवन में धर्म का पालन करने की प्रेरणा देता है। यदि व्यक्ति अपने कर्तव्यों को ईमानदारी, निःस्वार्थ भाव और भगवान के प्रति समर्पण के साथ करता है, तो वह स्वयं भी धर्म की स्थापना में योगदान देता है।

इस प्रकार यह श्लोक हमें विश्वास दिलाता है कि सत्य और धर्म की शक्ति अंततः अधर्म पर विजय प्राप्त करती है, और भगवान का दिव्य मार्गदर्शन सदैव जीवों को आध्यात्मिक उन्नति की दिशा में प्रेरित करता है।

पदों का भावार्थ

श्रीभगवानुवाच – श्रीभगवान ने कहा

यदा यदा – जब-जब



हि – निश्चय ही

धर्मस्य – धर्म की

ग्लानिः – हानि, पतन

भवति – होती है

भारत – हे भारतवंशी अर्जुन

अभ्युत्थानम् – वृद्धि, उत्थान

अधर्मस्य – अधर्म की

तदा – तब

आत्मानम् – अपने स्वरूप को

सृजामि – प्रकट करता हूँ

अहम् – मैं

श्लोक का संदेश

भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं कि जब-जब संसार में धर्म की हानि और अधर्म की वृद्धि होती है, तब-तब वे अपनी दिव्य शक्ति के द्वारा स्वयं को प्रकट करते हैं। भगवान का अवतार धर्म, सत्य और सदाचार की पुनः स्थापना के लिए होता है।

यह श्लोक हमें सिखाता है कि परिस्थितियाँ कितनी भी कठिन क्यों न हों, हमें धर्म और सत्य का मार्ग नहीं छोड़ना चाहिए।



RELATED ARTICLE



[Chapter-4 Shalok-5](#)



[Chapter-4 Shalok-6](#)



THANKS FOR READING



READ MORE RELIGIOUS
CONTENT ON



vedicprayers.com

